CHAPTER 10

रामचंद्रचन्द्रिका

PAGE 62, प्रश्न और अभ्यास

12:1:10:प्रश्न और अभ्यास:1

देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता?

उत्तर - देवी सरस्वती ज्ञान, सुर तथा कला की देवी है। मनुष्य के गले में विराजमान होती है। देवी सरस्वती के कारन ही इस संसार में ज्ञान का भण्डार उपलब्ध है। उनकी महानता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। किसी में भी इतना ज्ञान नहीं है की वह देवी सरस्वती की महिमा सके। अतः उनकी उदारता का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

12:1:10:प्रश्न और अभ्यास:2

चारमुख, पाँचमुख और षटमुख किन्हें कहा गया है और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?

उत्तर - कवि ब्रह्मा के लिए 'चारमुख', शिव को 'पंचमुख' और कार्तिकेय को 'षटमुख' कहा जाता है। ब्रह्मा को सरस्वती का स्वामी कहा जाता है। शिव को उनका पुत्र और शिव के पुत्र कार्तिकेय को उनका पौत्र कहा जाता है।

12:1:10:प्रश्न और अभ्यास:3

कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर - कबिता में पंचवटी के निम्नलिखित गुणों का उल्लेख किया गया है ।

(क) पंचवटी में सभी के दुःख हर किये जाते हैं तथा उन्हें सुख का अनुभव होता है ।

(ख) दुष्ट और अन्दर से शैतान लोग यहाँ एक पल भी नहीं रुक पाते हैं ।

(ग) पंचवटी पवित्र स्थलों में से एक है ।यहाँ पर आकर सभी के किये हुए पाप भी मिट जाते हैं ।

PAGE 63

12:1:10:प्रश्न और अभ्यास:4

तीसरे छंद में संकेतित कथाएँ अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर - तीसरे छंद में रावण की पत्नी मंदोदरी ने कुछ इस प्रकार कहा है :

(क) सिन्धु तथा उनका बनरा- इस पंक्ति में हनुमान जी द्वारा समुद्र लांघने का वर्णन है। सीता जी की खोज में जब वानर सेना विशाल समुद्र के किनारे पहुंची तो सभी चिंतित हो गये। क्योंकि किसी में भी समुद्र लांघने का सामर्थ्य नहीं था। तब जामवंत जी ने हनुमान जी को उनकी भूली हुयी शक्तियों का ज्ञान कराया। उसके बाद हनुमान जी जामवंत जी से प्रेरणा लेकर समुद्र पार लंका पहुँच गए।

(ख) धनुरेख गई न तरी - इस पंक्ति में रावण द्वारा सीता जी के हरण का वर्णन किया गया है। वन में सीता जी को एक स्वर्ण हिरन दिखाई देता है वह राम जी से उसे पाने

की इच्छा व्यक्त करती है है। राम जी लक्ष्मण को वही छोड़ के हिरन के लाने चले जाते है। कुछ देर तक वापस नहीं पर सीता जी व्याकुल हो जाती है तथा लक्ष्मण जी को राम जी के तलाश में जाने को बोलती है। लक्ष्मण जी मना कर देते है। परन्तु सीता जी के कहने पर वे एक लक्ष्मण रेखा खींचते है तथा उन्हें वो रेखा पार करने से मन करके चले जाते है। लक्ष्मण जी के जाने के बाद रावण ऋषि रूप लेकर भिक्षा के लिए आता है। लक्ष्मण रेखा के कारण वह अंदर नहीं जा पाता है। वह धर्म की बात कहकर भिक्षा लेने से मना कर देता है तथा कहता है की वह भिक्षा तभी लेगा जब वह उस लक्ष्मण रेखा को पार करके भिक्षा देंगी। धर्म के कारन सीता जी लक्ष्मण रेखा पार है जिसके बाद रावण उनका हरण कर लेता है।

(ग) तीसरे छंद में राम जी के सेना द्वारा समुद्र पार करने का भी वर्णन है। सीता जी का पता लगाने के बाद राम जी और लक्ष्मण जी वानर सेना के साथ समुद्र के है। समुद्र से रास्ता देने का अनुरोध करते है परन्तु समुद्र रास्ता नहीं देता है। समुद्र के बताये हुए उपाय से नल और नील की सहायता से पथ्थर का सेतु बनाकर राम जी और राम जी की सेना लंका पहुँच जाती है।

(घ) तेलनि तूलनी....लंक जराइ जरी - तीसरे छंद में हनुमान जी द्वारा अशोक वाटिका में मचाया गया उत्पात का भी वर्णन है। अशोक वाटिका में उत्पात मचने के समय हनुमान जी ने रावण के पुत्र अक्षत को मार दिया था। उसके बाद उन्होंने पूरी लंका जला दी थी।

12:1:10:प्रश्न और अभ्यास:5

निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) पति बनैं चारमुख पूत बनैं पंच मुख नाती बनैं षटमुख तदपि नई-नई।

(ख) चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी वन पंचवटी।

(ग) सिंधु तर यो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

(घ) तेलन तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराई-जरी।

उत्तर -

(क) सरस्वती जी की महिमा वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पंक्ति में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है। पुनरुक्ति अलंकार तथा अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है। तत्सम शब्दों जैसे कि पंचमुख षटमुख का भी प्रयोग किया गया है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति में कवि पंचवटी की सुन्दरता का वर्णन कर रहे हैं । इस पंक्ति में ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है। जरी' शब्द का प्रयोग २ बार हुआ है। दोनों बार इसका अर्थ अलग अलग है। इसलिए यह यमक अलंकार को दर्शाता है।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति में मंदोदरी रावण के ऊपर व्यंग करती है। इस पंक्ति की भाषा ब्रजभाषा है तथा गेय गुण विद्‌यमान है।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति में मंदोदरी ने हनुमान जी की शक्ति का वर्णन किया है। इस पंक्ति की भाषा ब्रजभाषा है तथा गेय गुण विद्‌यमान है। 'त ' तथा 'ज' जैसे शब्दों का सुन्दर प्रयोग अनुप्रास अलंकार को दर्शाता है। 'जरी' शब्द का प्रयोग २ बार हुआ है। दोनों बार इसका अर्थ अलग अलग है। इसलिए यह यमक अलंकार को दर्शाता है।

12:1:10:प्रश्न और अभ्यास:7

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) भावी भूत बर्तमान जगत बखानत है 'केसोदास' क्यों हू ना बखानी काहू पै गई।

(ख) अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरूजान-गटी।

उत्तर -

(क) प्रस्तुत पंक्ति में केशवदास जी देवी सरस्वती ज्ञान, सुर तथा कला की देवी है। मनुष्य के गले में विराजमान होती है। देवी सरस्वती के कारन ही इस संसार में ज्ञान का भण्डार उपलब्ध है। उनकी महानता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। किसी में भी इतना ज्ञान नहीं है की वह देवी सरस्वती की महिमा सके। अतः उनकी उदारता का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति में केशवदास ने पंचवटी के सौंदर्य का वर्णन किया है। कवि के अनुसार, पंचवटी इतना पवित्र है की इसको देखकर ही सारे पाप धुल जाते हैं। इसके अंदर ज्ञान का भंडार है जिसे महसूस किया जा सकता है। पंचवटी पांपो को घटाती है तथा पुण्य को बढाती है।